VOL- IX | ISSUE- I | JANUARY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

चौधरी चरणसिंह कुशल राजनितिज्ञ के रूप में

अमनदीप सिंह
शोध छात्र
राजनीति विज्ञान
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
पीलीबंगा हनुमानगढ़ (राज०)

डॉ० कमलेश राठौड़
राजनीति विज्ञान विभाग
सहायक आचार्य कला संकाय
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज०)

शोध का परिचयात्मक विश्लेषण

चौधरी साहब विलक्षण प्रतिभासम्पत्र एक ऐसे क्रान्तदर्शी राजनीतिज्ञ हैं देश के इतिहास में अपनी दूरदर्शिता, दृढ़ता और ईमानदारी के लिए सदा स्मरण किये जाते रहेंगे।

चौधरी साहब ही थे, जिन्होंने अंग्रेजों की कुटिल व्यूहरचना के सबसे मजबूत दुर्ग को अपने एक ही वार में ध्वस्त कर दिया। उनके इस अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य से देश और विदेश में उनकी प्रशंसा तो हुई ही, साथ ही प्रदेश के लाखों किसानों गरीबों, शोषित, दबे, थके तथा सदियों से उत्पीड़ित, शोषित और उपेक्षित लोगों के घरों में जिन्दगी की रोकनी फैल गयी और लोगों ने आजादी की सांस ली।

स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह एक साधारण किसान—परिवार में पैदा हुए थे और लोकहितैषी अपने कामों एवं उत्कट देशभक्ति के बल पर, भारत के प्रधानमंत्री के आसन तक पहुंच गये थे। यहां तक पहुंचने का उनका उद्देश्य, देश के संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करना, आतंकवाद के दानव को निष्प्राण बनाना, प्रशासन—तंत्र में गहरी जड़े जमाये बैठे भ्रष्टाचार को मिटाना, गांव और शहर की आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक प्रगति का, समान स्तर पर विकास करना, वर्ग तथा जाति—आधारित समाज को वर्गीय तथा जातीय संकीर्णता से मुक्त बनाना, देश की आर्थिक पर—निर्भरता को दूर करना, भारतीयों में राष्ट्रीयता के भाव भरना और उनमें प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के प्रति लगाव पैदा करना था। उनमें अपने विचार तथा भावों को साकार रूप प्रदान करने की जबरदस्त इच्छाशक्ति तथा ताकत थी। वह उच्च—कोटि के उदात्त विचारक होते हुए भी कर्मठ इंसान थे और भावुक तथा अति संवेदनशील होते हुए भी भ्रष्टाचारियों को दण्डित करने में नितांत कठोर थे।

प्रस्तावित शोध के सोपान

१. भारत में व्याप्त जातीय भेदभाव को मिटाने के लिए आापने एक सार्थक साधन रूप में, पूर्व प्रधानमंत्री पं. नेहरू को, एक सुझाव दिया था कि प्रशासनिक सेवाओं में चयनित अविवाहित युवकों के लिए हरिजन जातियों की कन्याओं के साथ विवाह करने अनिवार्य कर दिया जाए।

२.राजनीतिक सत्ता पर अधिकार का तात्पर्य था, जन—समस्याओं का जन—हितकारी समाधान।

३.चरणसिंह जातीय एकता के प्रबल पक्षधर थे।

४.स्वर्गीय चौधरी साहब व्यावहारिक नेता थे, कल्पना के महल सजाने वाले नेता नहीं। वह आचरण के पक्के तथा दृढ़ व्यक्ति थे, स्वप्नदर्शी विचारक नहीं।

५.चरणसिंह भारतीय राजनीति में सुशासन, लोकहित, ईमानदारी और दृढ़निश्चय का पर्याय बनकर उभर सके थे।

प्रस्तावित शोध का महत्व

संभवत: वह पहले व्यक्ति है, जिसने लोकहित, सुशासन और देशभक्ति के प्रश्न पर, उत्तर—प्रदेश में मंत्रिमंडल से, कई बार त्याग—पत्र दिया था और वह निश्चित रूप से ऐसे प्रथम प्रधानमंत्री थे, जिसने केन्द्र में अपनी सरकार बचाने के लिए, किसी दल के साथ गठजोड़ नहीं किया।

स्वर्गीय चौधरी साहब का बोद्धिक उत्कर्ष और राष्ट्रीय चरित्र का विकास, आगरा में छ: वर्षो के निवास के दौरान हुआ था, जहां वह अध्ययन के लिए गये थे। इसके दो विशेष कारण थे— पहले देश में उत्पन्न राष्ट्रीयता की भावना और दूसरा आगरा का राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक परिवेश। अभी तक १८५७ के प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन की चिंगारियां पूरी तरह बुझ नहीं पाई थी कि लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन करके उनको और सुलगा दिया था। परिणामस्वरूप पूरे बंगाल में स्वदेशी वस्तु—प्रयोग का आन्दोलन जोर पकड़ गया था।

आगरा क्रांतिकारी भावना का केन्द्र था और यह भावना वहां के छात्रो में देशभक्ति का भाव भरा करती थी। चौधरी साहब, यहां की देशभक्ति के परिवेश में पूर्णत: डूब कर सच्चे देशभक्त बन गये थे। विशेष बात यह है कि उनकी देशभक्ति, यथार्थ में देशभक्ति थी, अपने स्वार्थो की पूर्ति करने वाला दिखावा न था। आज के अनेक राजनैतिक नेता देशभक्ति के नारे लगाते हैं, देशहित के उपदेश करते हैं, देश के भले के लिए सर्वस्व त्यागने की बात करते हैं, लेकिन उनके कार्यो के पीछे उद्देश्य होता है, केवल अपने तथा परिवार के लिए अपार दौलत इकट्ठी कर लेना। इनके कथन और कर्म में अंतर होता है। चौधरी साहब की देशभक्ति ऐसी नहीं थी। आपने असत्य, बुराई और देश—विरोधी कार्यो के साथ, कभी समझौता नहीं किया।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य

स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह अपने देशभक्त पुरखों की क्रांतिकारी परम्परा का सफल निर्वाह करने वाले थे। आपने बड़े से बड़े राजनीतिक प्रलोभन को लात मार दी, पर देश की अधिकांश जनता के लिए अलाभकारी नीति के विरोध में मजबूती के साथ सदैव खड़े रहे। जिन नेताओं ने आम आदमी के हितों की उपेक्षा करके, उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाया था, उनका आपने विरोध हमेशा किया।

उनकी दृष्टि से, पहले वर्ग के चारों समुदाय, राष्ट्र के शोषक थे और किसान—समाज उसका रक्षक तथा पोषक था। यही कारण है कि उन्होंने सदैव किसान—हित को अपनी राजनीति का मेरूदण्ड बनाया। उनका यही चिंतन और कर्म का रास्ता देश

की समृद्धि कल्याण और सबलता की ओर जाता है।

यही नहीं आपने कांग्रेस—पार्टी के अध्यक्षों की संकीर्ण नीतियों का तर्कपूर्ण खंडन भी किया था और पंडित नेहरू जैसे शक्तिशाली प्रधानमंत्री की सहकारी खेती विषयक अलाभकारी नीति के विपक्ष में बोलने का साहस भी किया था। आपने अपने राजनीतिक भविष्य को दांव पर लगा दिया, पर जनहितकारी परम्परा का त्याग नहीं किया।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

उत्तर—प्रदेश के एक कांग्रेसी मुख्यमंत्री समाजवाद पर सैद्धातिक लेख लिखते थे, पर उत्पादन—मूल्य से कम दामों पर बिजली उद्योगपति की एक फैक्ट्री को देते थे, गरीब किसान, मजदूर तथा दुकानदारों को नहीं। इसी तरह एक अन्य मुख्यमंत्री, कांग्रेस—दल के लिए पैसा उद्योगपतियों की झोली में डाल रहे थे। ऐसे मुख्यमंत्रियों के मंत्र—मण्डलों में रहते हुए भी चौधरी साहब ने उनकी नीतियों का विरोध करने और आवश्यक हुआ तो मंत्रि—मण्डल से त्याग—पत्र देने का साहस प्रदर्शित किया है, जिसका लेशमात्र अस्तित्व आजकल की राजनीति में दिखाई नहीं पड़ता है। अस्तु, उनको भारतीय राजनीति में अनुपमेय नेता कहा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एम.जी. : दी प्राइम मिनिस्टरस् ऑफ इण्डिया, एम.जी, पब्लिकेशेन्स, आगरा, १९८९
2. गोयल, सुखवीर सिंह : संक्षिप्त जीवनी— चरणसिंह, किसान सम्मेलन, नई दिल्ली,१९७८
3. थोर्नर, डी : दी अग्रेरियन प्रोसपेक्ट्स, इन इण्डिया, यूनिवर्सिटी ऑफ देहली प्रैस, १९६५
4. देसाई ए.आर. :सोशल बैंकग्राउण्ड ऑफ इण्डियन सोसलिज्म,बम्बई १९५४